APRIL 2018 TO MARCH 2019

NEWS PAPER COVERAGE 2018-19

साल-दर-साल सोयाबीन से किसानों को चोट

नवभारत सरोकार

■ नवभारत । कवर्धा

किसानों की मुसीबत कम होने का नाम ही नहीं ले रही है. सरकार के अलावा प्राकृतिक आपदायें भी मुसीबत लेकर नित दिन आ खड़ी होती है. जिसके चलते किसानों की आर्थिक व्यवस्था बेहद खस्ताहाल स्थिति में है. कर्ज लेकर की गई खेती से प्राप्त कम फसल एवं खराब क्वालिटी को देखकर किसान के पास मातम मनाने के अलावा कोई चारा नजर नहीं आ रहा. पिछले तीन वर्षों में सोयाबीन की फसल प्रति एकड़ कम हो रही है जिसके चलते किसानों के माथे पर चिंता की लकीरें खींच गई है.

एक समय था जब पूरे छत्तीसगढ़ में सोयाबीन सबसे ज्यादा कवर्धा जिले में ही उत्पादन होता था लेकिन विगत तीन से चार वर्षों से सोयाबीन की उत्पादन में कमी आई है। इस साल तो स्थिति और भी ज्यादा खराब है। कृषि वैज्ञानिकों की मानें तो इस साल सोयाबीन के लिए बीज भी मिलना मुश्किल होगा। तीन वर्षों से किसान सोयाबीन की फसल में नुकसान उठा रहे है जिसके कारण अब सोयाबीन को छोड़ कर अन्य फसल लेना शुरू कर दिये है। वहीं कृषि वैज्ञानिक इसके पीछे किसानों द्वारा एक ही किस्म के बीज का उपयोग करने, मौसम में बदलाव तथा फसल चक्र पद्धति न अपनाने को कारण मान रहे है।

प्रतिवर्ष 500 से 600 हेक्टेयर उत्पादन में आई कमी

जिले में धान के बाद सबसे ज्यादा फसल सोयाबीन की ली जाती है क्योंकि यह कम पानी में ज्यादा पैदावार वाली फसल है इसके अलावा यहां की काली मिट्टी सोयाबीन के लिए अनुकूल है ऐसे में विगत कई वर्षों से यहां के किसान धान के बाद सोयाबीन की फसल लेते थे बढ़ती उत्पादन को देखते हुए यहां के किसान संघ द्वारा सोयाबीन के तेल एवं अन्य बनने वाली सामाग्रियों लिए फैक्ट्री लगाने की भी मांग उठ रही थी लेकिन विगत तीन साल से यहां के किसानों को अब सोयाबीन में लगातार घाटा उठाना पड़ रहा है। तीन वर्ष पहले जहां क्षेत्र में प्रति वर्ष 60 से 70 हजार हेक्टेयर में सोयाबीन की फसल ली जाती थी वहीं आज घटकर 48 हजार हेक्टेयर में फसल ली जा रही है. औसतन प्रतिवर्ष 500से 600 हेक्टेयर में उत्पादन घट रहा है। उत्पादन की बात करे तो तीन वर्ष पहले जहां 1270 मीट्रिक टन सोयाबीन उत्पादन होता था प्रति एकड़ होने वाली उत्पादकता की मात्रा भी घट चुकी है जो कि चिंता का विषय है.

फाईल फोटो-

बीज की किस्म बदलने की जरूरत

जिले में सोयाबीन की जेएस 335 एवं जेएस 9560 किस्म का उपयोग कर रहे है लंबे समय तक एक ही किस्म के सोयाबीन के उपयोग से यह उत्पादन नहीं दे रही है ऐसे में किसानों को सोयाबीन के अन्य किस्म की खेती करने की आवश्यकता है साथ ही मौसम में विगत तीन वर्ष से लगातार बदलाव देखा जा रहा है यह भी एक कारण माना जा रहा है. यही नहीं यहां के किसान फसल चक्र पद्धति का उपयोग नहीं करते जिसके कारण उन्हें नुकसान उठाना पड़ रहा है. किसानों को फसल चक्र के तहत चना व सोयाबीन के अलावा अरहर एवं अन्य फसल भी लेना होगा तभी किसानों को सोयाबीन से लाभ हो पायेगा. वहीं अब कृषि वैज्ञानिक अब किसानों को इसके लिए जागरूक करने के लिए भी प्रयास करने की बात कह रहे है. वहीं किसानों को भी इस मामले में कृषि वैज्ञानिकों की सलाह लेकर कृषि पद्धति को परिवर्तित करने की आवश्यकता है. क्योंकि बीज की भी एक उम्र होती है जिसे समय बाद बदलना होता है. यह कार्य विभाग द्वारा नहीं हो पाया है. जिसके चलते उत्पादन में फर्क महसूस किया जा रहा है.

गंभीर विषय

- पिछले तीन वर्षों से लगातार घट रहा सोयाबीन का रकबा
- किसानों के माथे पर चिंता की लकीर
- फसल में बढ़ोत्तरी को लेकर कर रहे मंथन

वर्षवार आंकड़े

- 2018 48 हजार हेक्टेयर
- 2017 50 हजार हेक्टेयर
- 2016 55 हजार हेक्टेयर
- 2015 60 हजार हेक्टेयर

किसान व कृषि वैज्ञानिक चिंतित

लगातार कम हो रही उत्पादकता से किसान भी परेशान है अब किसानों को सोयाबीन से लाभ ही नहीं हो रहा है ऐसे में किसानों का मोह सोयाबीन से हट रहा है. ज्यादातर किसानों को भी नहीं पता कि सोयाबीन की उत्पादकता क्यों कम हो रही है. लगातार हो रहे नुकसान को देखते हुए अब कवर्धा जिले के किसान सोयाबीन की फसल छोड़कर अन्य फसल ले रहे है. सोयाबीन की घटती उत्पादकता से कृषि वैज्ञानिक भी परेशान है वैज्ञानिकों की माने तो जिले के किसान सोयाबीन की एक ही किस्म का लगातार उत्पादन करते आ रहे है.

3 साल, 3 आपदाएं

किसान के सामने मुसीबतों का पहाड़ दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है. नगदी फसल के रूप में माने जाने वाले सोयाबीन पिछले तीन वर्षों से लगातार खेतों में ही दम तोड़ रहा है. वर्ष 2015-16 में हुदहुद तूफान, 2016-17 में बारिश के तबाही मचाने के चलते तालाब में तब्दील हो गया था खेत, वहीं 2017-18 में रही-सही कसर बारिश और कीट ने पूरी कर दी जिसके चलते तीन वर्षों किसानों की आर्थिक कमर तोड़कर बदहाल कर दिया

"पिछले तीन वर्षों से प्राकृतिक आपदाओं के चलते सोयाबीन का रकबा घटा है. साथ ही बीज को बदलने की तैयारी की जा रही है.

बीपी त्रिपाठी, कृषि वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा

"लगातार सोयाबीन का उत्पादन कम होने के पीछे प्रमुख कारण यह है कि कृषि विभाग किसानों को उच्च गुणवत्ता युक्त बीज उपलब्ध नहीं करा पा रहा है. बार-बार एक ही किस्म के बीज विभाग द्वारा किसानों को दिया जा रहा है. विभाग को जल्द ही उच्च संशोधित किस्म के बीज किसानों को उपलब्ध कराना चाहिए ताकि उत्पादन बढ़ सके.

अवैध जायसवाल, कृषक सहीया, कबीरधाम

गाजर घास जागरूकता दिवस मनाया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶कवर्धा

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा गत 16 अगस्त से 22 अगस्त तक गाजरघास जागरूकता दिवस मनाया गया। इस दौरान रेड्डी फाउण्डेशन के लीड कृषक को गाजरघास के हानिकारक प्रभाव से अवगत कराया गया। ग्राम नेवारी के आसपास गाजरघास को उखाड़कर ग्रामिणों को गाजरघास को नष्ट करने की प्रेरणा दी गई। वहीं कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स के तहत इनपुट डीलर्स को गाजरघास के दुष्प्रभाओं से अवगत कराया गया।

ताकि वे अपने संपर्क में आये कृषकों को जानकारी देकर गाजरघास को नष्ट किया जा सके। कृषि विभाग के सेवारत कर्मचारियों को भी गाजरघास की हानिकारक प्रभाव एवं उसकी उन्मूलन की जानकारी डॉ. बीपी त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा दिया गया। इसी तारतम्य में ग्राम नेवारी के स्कूल में छात्र-छात्राओं को गाजरघास के दुष्प्रभाव एवं इनसे होने वाले बीमारियों के बारे में तथा उन्मूलन के विषय में इंजी. टीएस सोनवानी एवं मनीषा खापर्डे, वैज्ञानिक द्वारा दिया गया तथा रैली के माध्यम से गाजरघास के विषय में अवगत कराने के लिए ग्रामीणों को प्रेरित किया गया। का आव्हान किया है।

कवर्धापत्रिका . 16

पत्रिका . कवर्धा . शनिवार . 26.05.2018

कार्यक्रम आयोजित

कृषि विज्ञान केन्द्र नें मत्स्य पालकों को दिए प्रशिक्षण

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

कवर्धा. कृषि विज्ञान केन्द्र में एक दिवसीय मत्स्य पालक कृषक प्रशिक्षण सह संगोष्ठि का आयोजन किया गया। इस दौरान मत्स्य पालक को मछली पालन के विषय में जानकारी प्रदान की गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बीपी त्रिपाठी ने कृषि विज्ञान केन्द्र की प्रमुख गतिविधियों व मछली पालन से कृषक की आय दुगुनी करने में कैसे कारगर सिद्ध होगा, इसकी जानकारी दी गई। मनीषा खापर्डे विषय वस्तु विशेषज्ञ ने पालने योग्य मछली प्रजातियों के बारे में बताते हुए मिश्रित मछली पालन की सम्पूर्ण जानकारी कृषकों को दी। डॉ. बीआर होशानंदा ने मछली में होने वाले प्रमुख बीमारियों व निदान के विषय में जानकारी दी। दुष्यंत दामले ने समन्वित मछली पालन विषय में कृषकों से चर्चा किया। प्रशिक्षण के अंत में कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण कराया गया, जिसमें उन्होंने समन्वित मछली पालन प्रणाली के अंतर्गत मछली सह-बतख पालन ईकाई का अवलोकन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 25 से अधिक कृषक उपस्थित थे।

कार्यक्रम...

कृषक संगोष्ठी व सम्मान समारोह का आयोजन

आयोजन... कृषक संगोष्ठी में किसानों को किया सम्मानित।

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

कवर्धा. कृषि विज्ञान केन्द्र व रेड्डी फाउंडेशन के तत्वाधान में 21 मार्च को ग्राम गांगपुर में कृषक संगोष्ठी सह लीड फार्मर सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लीड फार्मर को प्रोत्साहित करना है। जिससे प्रेरित होकर अन्य कृषक अपनी आय दुगुनी कर सके। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा 10 कृषकों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। इस दौरान डॉ. बीपी त्रिपाठी द्वारा रबी फसलों में कीट व्याधि नियंत्रण व आगामी खरीफ फसल के लिए भूमि तैयारी, गर्मी की गहरी जुताई, बीज उपचार, धान व सोयाबीन के अलावा मूंगफली की विस्तृत जानकारी किसानों को प्रदान की। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित युवा वैज्ञानिक परशोत्तम सिन्हा, ग्राम पंचायत गांगपुर के सरपंच, रोजगार सहायक नारायण पटेल सहित सैकड़ों किसान उपस्थित रहे। गांगपुर के आसपास के पंचायत से पहुंचे कृषकों ने अपनी समस्या रखी। जैसे बैंगन के फल में छेदक कीट, भिण्डी के मोजेक वायरस, बरबट्टी के मोजेक वायरस, लौकी की रेड पम्पकिन बीटल की समस्याओं का डॉ. बीपी त्रिपाठी द्वारा त्वरित निदान किया गया। साथ ही कृषकों को समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने के लिए विस्तृत जानकारी दी।